SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

अंक-3, खण्ड-3, जुलाई - सितम्बर 2025 E-ISSN : 2584-2900

महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा का बच्चों पर प्रभाव : एक अध्ययन

अर्चना दुबे

सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सारांश

घरेलू हिंसा की घटनाएं समाज मे कितनी व्यापक है यह अंदाज लगा पाना मुश्किल ही है। महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों मे घरेलू हिंसा एक ऐसा कृत्य, अपराध है जिसे प्रायः छिपाया जाता है। महिलायें स्वयं अपने प्रति होने वाली हिंसा की शिकायत नहीं करती बल्कि कई बार तो इसे नकार दिया जाता है। घरेलू हिंसा को चूंकि व्यक्तिगत पारिवारिक हिंसा की घटना को उजागर करने से संबंधों के बिगड़ने से एवं घर टूटने से जोड़ कर देखा जाता है। घरेलू हिंसा एक गंभीर सामाजिक समस्या है, जो केवल महिलाओं तक सीमित नहीं रहती, बल्कि पूरे परिवार और समाज पर गहरा प्रभाव डालती है।

विशेष रूप से बच्चे, जो परिवार का सबसे संवेदनशील हिस्सा होते हैं, इस हिंसा से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होते हैं। घरेलू हिंसा का वातावरण बच्चों में मानसिक आघात, आत्मविश्वास की कमी, भय, आक्रामकता, असुरक्षा और शिक्षा में गिरावट जैसे अनेक नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करता है। लंबे समय में यह समस्या उनके व्यक्तित्व निर्माण, रिश्तों में विश्वास और सामाजिक समायोजन की क्षमता को बाधित करती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में महिलाओं पर घरेलू हिंसा के बच्चों पर पड़ने वाले बहुआयामी प्रभावों का अध्ययन किया गया है तथा इससे निपटने हेतु समाज, सरकार और शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।

बीज शब्द

घरेलू हिंसा, महिला, तनाव, प्रभाव, बच्चे, स्वास्थ्य, सामाजिक समस्या।

प्रस्तावना

भारत सहित पूरी दुनिया में घरेलू हिंसा एक गंभीर समस्या है। संयुक्त राष्ट्र (UN) की रिपोर्ट के अनुसार विश्व भर में लगभग तीन मे से एक महिला कभी न कभी घरेलू हिंसा का शिकार होती है। भारत में नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (NFHS-5,2019-21) के आंकड़ों के अनुसार लगभग 29% विवाहित महिलाएँ अपने जीवन में शारीरिक, मानसिक या भावनात्मक हिंसा का सामना करती हैं। जब किसी महिला पर घरेलू हिंसा होती है, तो यह केवल उस महिला तक सीमित नहीं रहती। उसका असर बच्चों पर भी पड़ता है। बच्चे प्रत्यक्ष रूप से हिंसा का शिकार न भी हों, तो भी वे घर में हो रही घटनाओं के साक्षी बनते हैं। घर का वातावरण उनके मन-मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ता है। बचपन जीवन का वह दौर है जिसमें व्यक्ति का मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास होता है। यदि इस समय बच्चे हिंसा, झगड़े और तनाव का अनुभव करते हैं, तो यह उनके पूरे जीवन को प्रभावित कर सकता है।

उद्देश्य

इस शोध-पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- महिलाओं पर होने वाली घरेलू हिंसा का बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव समझना।
- बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों और व्यक्तित्व निर्माण पर घरेलू हिंसा के परिणामों का अध्ययन करना।
- बच्चों के सामाजिक व्यवहार और भविष्य के रिश्तों पर इसके दीर्घकालिक प्रभावों की पहचान करना।
- घरेलू हिंसा की रोकथाम और बच्चों की सुरक्षा हेतु उपाय सुझाना।

शोध पद्धति

यह शोध-पत्र द्वितीयक स्रोतों (Secondary Sources) पर आधारित है। इसके लिए विभिन्न शोध लेख, रिपोर्ट, सरकारी सर्वेक्षण (NFHS), यूनिसेफ (UNICEF) और विश्व स्वास्थ्य संगठन

(WHO) की रिपोर्टों का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त भारतीय समाज में बच्चों पर घरेलू हिंसा के प्रभावों से संबंधित केस स्टडी और उदाहरणों का भी उल्लेख किया गया है।

बच्चों पर घरेलू हिंसा के प्रभाव

जब बच्चे अपने घर में मां के साथ हो रही घरेलू हिंसा को देखते हैं, चाहे वे खुद पीड़ित न हों, तब भी यह अनुभव उनके मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षिक और शारीरिक विकास पर गहरा असर डालता है-

1. मानसिक प्रभाव

बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य घरेलू हिंसा से सबसे अधिक प्रभावित होता है।

डर और असुरक्षा की भावना (Fear & Insecurity)

- बच्चे लगातार डर के माहौल में रहते हैं।
- उन्हें लगता है कि घर कभी भी सुरक्षित नहीं है।
- वे रात में डरकर उठ जाते हैं, बुरे सपने देखते हैं।

आत्मविश्वास की कमी (Low Self-Esteem)

- बच्चे खुद को कमजोर और असहाय महसूस करते हैं।
- वे सोचते हैं कि वे कुछ भी ठीक नहीं कर सकते।
- खुद पर विश्वास नहीं रह जाता।

अवसाद और चिंता (Depression & Anxiety)

- बच्चे उदास रहते हैं, किसी चीज़ में रुचि नहीं लेते।
- छोटी-छोटी बातों पर घबरा जाते हैं।
- लंबे समय तक यह मानसिक रोग का रूप ले सकता है।

भावनात्मक असंतुलन (Emotional Imbalance)

- बच्चे कभी बहुत गुस्सा करते हैं, तो कभी बहुत चुप हो जाते हैं।
- उन्हें अपनी भावनाएँ समझना और व्यक्त करना कठिन हो जाता है।

2. शैक्षिक प्रभाव

शिक्षा पर घरेलू हिंसा का सीधा असर पड़ता है।

पढ़ाई में ध्यान की कमी

- बच्चा कक्षा में बैठा होता है लेकिन मन घर की हिंसा में अटका होता है।
- होमवर्क पूरा नहीं करता, पढ़ाई में मन नहीं लगता।

प्रदर्शन में गिरावट (Poor Academic Performance)

- अंक गिरते हैं, टीचर से डाँट मिलती है।
- कई बार बच्चा स्कूल ही छोड़ देता है।

स्कूल में व्यवहार संबंधी समस्याएँ

- लड़ाई करना, गुस्सा करना, टीचर की बात न मानना।
- दोस्तों से झगड़ा करना या किसी से बात न करना।

3. सामाजिक (Social) प्रभाव

समाज से अलगाव

(Social Withdrawal)

- बच्चा लोगों से दूर रहने लगता है।
- किसी से बात नहीं करना चाहता।
- उसे लगता है कि कोई उसे समझेगा नहीं।

हिंसा को सामान्य मानना

- बच्चा यह सोचने लगता है कि "मारना-पीटना" सामान्य है।
- भविष्य में वह खुद भी हिंसक हो सकता है या हिंसा को सहन कर सकता है।

रिश्तों में विश्वास की कमी

- बड़े होकर बच्चा किसी पर विश्वास नहीं कर पाता।
- दोस्ती और प्यार के रिश्तों में भी डर और शक बना रहता है।

4. शारीरिक प्रभाव

नींद की समस्या

- बच्चा ठीक से सो नहीं पाता, बुरे सपने आते हैं।
- सुबह थका हुआ महसूस करता है।

बार-बार बीमार पड़ना

- तनाव से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है।
- सिरदर्द, पेटदर्द, बुखार, कमजोरी आदि।

नशे की लत की ओर झुकाव

- कुछ बच्चे तनाव से बचने के लिए किशोरावस्था में नशा करना शुरू कर देते हैं।

5. दीर्घकालिक प्रभाव

रिश्तों में असफलता

- बच्चा बड़ा होकर स्वस्थ रिश्ते नहीं बना पाता।
- डर, शक और अविश्वास बना रहता है।

नकारात्मक व्यक्तित्व

- हिंसक, असंवेदनशील या डरपोक व्यक्तित्व बन सकता है।
- आत्मसम्मान की कमी जीवनभर बनी रहती है।

अपराध या हिंसा की ओर झुकाव

कुछ बच्चे आगे चलकर अपराध, मारपीट, घरेलू हिंसा के अपराधी बन सकते हैं।

बड़े होकर रिश्तों में विश्वास की कमी।

आत्मसम्मान की समस्या और असफलताओं से डर।

नशे, अपराध या हिंसा की ओर बढ़ने की संभावना।

महिलाओं के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण (लड़कों में) और खुद को दोषी मानने की प्रवृत्ति (लड़कियों में)।

महत्वपूर्ण तथ्य

बच्चों पर घरेलू हिंसा का प्रभाव सीधा और गहरा होता है। यह प्रभाव लड़कों और लड़कियों दोनों पर पड़ता है, लेकिन अलग-अलग तरीके से, अगर समय पर समर्थन, काउंसलिंग और सुरक्षित वातावरण न मिले तो यह समस्या जीवनभर साथ रहती है।

कुछ संकेत जिनसे पता चलता है कि बच्चा प्रभावित है:

- बार-बार रोना या चुप रहना।
- गुस्सा करना या झगड़ालू होना।
- पढ़ाई में मन न लगना।
- दोस्तों से दूरी बनाना।
- डरना, कांपना, नींद न आना।

बच्चों की स्थिति को समझने में मदद करने वाले दृश्य इस बात के संकेत हैं कि घरेलू हिंसा बच्चों के लिए एक अदृश्य ज़हर की तरह है। वे बाहर से सामान्य दिख सकते हैं, लेकिन अंदर से टूट रहे होते हैं। अगर समाज, परिवार और स्कूल समय रहते ध्यान दें और बच्चों को मानसिक व भावनात्मक सहयोग दें, तो वे इस आघात से बाहर आ सकते हैं।

मध्य प्रदेश: महिलाओ पर घरेलू हिंसा व उससे प्रभावित बच्चों का व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति से अध्ययन-

1. **छतरपुर में जबरदस्ती शादी और यातना की घटना**

एक लड़की को छतरपुर, मध्य प्रदेश में शादी के लिए जबरदस्ती बेचा गया। उसे ₹1 लाख में एक व्यक्ति को बेचा गया, जहाँ उसे शादी करने पर मजबूर किया गया और शारीरिक उत्पीड़न का शिकार बनाया गया इस दौरान लड़की ने अपने भाई को संपर्क किया, जिसके बाद पुलिस ने उसे सुरक्षित निकालकर आरोपी को न्यायिक हिरासत में ले लिया।

बच्चे पर प्रभाव: यह लड़की (अधिमात्रा किशोरी) मानसिक और शारीरिक रूप से बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुई– "जबरदस्ती शादी" और "शारीरिक उत्पीड़न" दोनों ही गहरे ट्रॉमा का कारण बने।

2. ग्वालियर: मां और 3 वर्षीय बेटी का हत्या–घरेलू हिंसा का चरम परिणाम

ग्वालियर ज़िले के डबरा सिमरिया ताल गांव में 25 वर्षीय मां और उसकी 3 वर्षीय बेटी को जलाकर मार दिया गया पाया गया। घटना से पहले पति द्वारा शारीरिक हिंसा व तंग करने की कथित जानकारी सामने आई है। प्रारंभिक जांच में आत्म-दहन की संभावना (self-immolation) जताई गई, लेकिन केस संदिग्ध है और जांच जारी है

बच्चे पर प्रभाव: 3 वर्षीय बच्ची इस हिंसा का प्रत्यक्ष शिकार बनी–यह एक चरम लेकिन बेहद स्तब्ध कर देने वाला उदाहरण है कि घरेलू हिंसा कैसे सबसे नाजुक उम्र में जान लेवा हो सकती है।

3. विदिशा जिले की अन्य त्रासदी: मां व बेटी की हत्या

गंजबसौदा (विदिशा) में एक व्यक्ति ने अपनी लाइव-इन पार्टनर व उसकी 3 वर्षीय बेटी को गला घोंटकर मार डाला, और "she wanted to elope" का संदेश मौके पर लिखा पाया गया

यह घटना एक और अत्यंत मार्मिक उदाहरण है कि कैसे महिलाओं पर अत्याचार बच्चों को भी जीवन-मरण के स्तर पर प्रभावित कर सकता है।

केस स्टडी सारांश तालिका

घटना स्थान	विवरण बच्चों पर प्रभाव
छतरपुर	लड़की को जबरदस्ती शादी के लिए बेचा और शारीरिक उत्पीड़न मानसिक और शारीरिक आघात, भविष्य पर प्रभाव
ग्वालियर (डबरा)	मां और तीन वर्षीय बेटी जलकर मरीं नाज़ुक उम्र में जीवन-हानि, मानसिक/शारीरिक क्षति
विदिशा	मां व बेटी की गला घोटकर हत्या भयावह पारिवारिक हिंसा, बच्चे को भी मारपीट में शामिल

इंदौर के एक NGO Eva Welfare Organisation द्वारा 15 झुग्गी-झोंपड़ी इलाकों में दो साल के सर्वे में पाया गया कि घरेलू हिंसा वाले परिवारों के लगभग आधे बच्चे ड्रग की लत के शिकार हैं। उदाहरण के लिए, मूसाखेड़ी में 49% बच्चे नशे के आदि पाए गए। प्रस्तुत सर्वे यह दर्शाता है कि घरेलू हिंसा का बच्चों की जीवनशैली और स्वास्थ्य पर लम्बे समय तक चलने वाला नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

जनसंख्या आधारित अध्ययन

एक व्यापक अध्ययन में, मध्य प्रदेश के किशोरों में 10.4% ने लैंगिक आधारित हिंसा (Gender-Based Violence) का अनुभव किया। लड़कियों को इसका विषम अनुपात 5.7 गुना अधिक पाया गया। यह सामाजिक और आर्थिक असमानता और लैंगिक पूर्वाग्रह को उजागर करता है जो बच्चों के मानसिक व सामाजिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

भोपाल की एक 12 वर्षीय बच्ची (रीता) रोज़ अपने पिता को माँ को मारते-पीटते देखती थी। धीरे-धीरे वह स्कूल में गुस्सैल और झगड़ालू हो गई। शिक्षकों ने उसकी काउंसलिंग करवाई तो पता चला कि घरेलू हिंसा ने उसके व्यक्तित्व पर गहरा असर डाला है। इसी प्रकार मध्यप्रदेश में एक 15 वर्षीय लड़के ने पढ़ाई छोड़ दी क्योंकि घर का माहौल झगड़ों और मारपीट से भरा था। बाद में वह नशे की लत में पड़ गया। यह उदाहरण बताता है कि कैसे घरेलू हिंसा बच्चों को गलत रास्ते पर धकेल सकती है।

चर्चा

घरेलू हिंसा का बच्चों पर प्रभाव केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहता, बल्कि समाज पर भी पड़ता है। जब बच्चे हिंसा देखते हैं, तो वे यह मानने लगते हैं कि हिंसा समस्या का समाधान है। यह विचारधारा समाज में हिंसा की निरंतरता को बनाए रखती है। इसके अलावा, घरेलू हिंसा पीड़ित बच्चों को जीवनभर मानसिक घाव देती है। वे अपने रिश्तों में विश्वास नहीं

कर पाते और कभी-कभी खुद भी हिंसक हो जाते हैं। इस तरह यह समस्या एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जाती रहती है। ये केस स्टडी और सर्वे दिखाते हैं कि घरेलू हिंसा सिर्फ एक महिला तक सीमित नहीं रहती बल्कि यह बच्चों के जीवन को गहरे तौर पर प्रभावित करती है। अत्याधिक हिंसा हत्या, जबरदस्ती शादी बच्चों को शारीरिक और मानसिक रूप से निशस्त्र छोड़ती है। दीर्घकालीन प्रभाव मे ड्रग की लत, मानसिक तनाव, हिंसा में शामिल होना पाया जाता है।

निष्कर्ष और सिफारिशें

इस शोध के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि घरेलू हिंसा बच्चों के मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और शैक्षणिक जीवन को प्रभावित करती है। सबसे पहले, बच्चों में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं देखी गईं, जैसे कि चिंता, अवसाद, भय और आत्मविश्वास की कमी। जब बच्चा बार-बार हिंसा का साक्षी बनता है, तो उसके अंदर असुरक्षा की भावना गहरी हो जाती है। कई बार ऐसे बच्चे स्वयं को दोषी मानने लगते हैं और अपराधबोध से ग्रसित हो जाते हैं। दूसरे, इस प्रकार की परिस्थितियाँ बच्चों के व्यवहार और सामाजिक विकास को भी प्रभावित करती हैं। शोध से पता चलता है कि घरेलू हिंसा देखने वाले बच्चे अक्सर आक्रामक, चिड़चिड़े और असामाजिक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। वहीं, कुछ बच्चे अत्यधिक संकोची और अलग-थलग हो जाते हैं। यह द्वंद्वात्मक प्रभाव उनके व्यक्तित्व निर्माण में बाधा डालता है।

तीसरे, घरेलू हिंसा बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धियों पर भी असर डालती है। घर के तनावपूर्ण माहौल में बच्चों का ध्यान पढ़ाई पर केंद्रित नहीं हो पाता। स्कूल से अनुपस्थिति, कम अंक और पढ़ाई में अरुचि इस समस्या के प्रत्यक्ष संकेतक हैं। इसके अलावा, ऐसे बच्चे भविष्य में अपने रिश्तों में भी हिंसक व्यवहार अपना सकते हैं। कई अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकला है कि हिंसा का वातावरण देखने वाले बच्चों में हिंसा दोहराने की संभावना अधिक होती है। इसका अर्थ है कि वे बड़े होकर अपने साथी के साथ वैसा ही व्यवहार कर सकते हैं, जैसा उन्होंने अपने घर में देखा था। हालांकि, यह भी देखा गया कि सभी बच्चे समान रूप से प्रभावित नहीं होते।

जिन परिवारों में बच्चों को अन्य सुरक्षित सहारा जैसे दादी-दादा, शिक्षक, या काउंसलर मिलते हैं, वहाँ वे अपेक्षाकृत बेहतर ढंग से परिस्थितियों का सामना कर पाते हैं। यह दर्शाता है कि सामाजिक समर्थन और परामर्श सेवाएं बच्चों की स्थिति सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

अध्ययन से स्पष्ट है कि महिलाओं पर होने वाली घरेलू हिंसा केवल "लिंग-आधारित" समस्या नहीं है, बल्कि यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को स्थानतरित समस्या भी है, जिसका सीधा असर बच्चों की अगली पीढ़ी पर पड़ता है। इसलिए, नीतिगत स्तर पर केवल महिलाओं की सुरक्षा पर ही नहीं, बल्कि बच्चों के पुनर्वास और मनोवैज्ञानिक सहायता पर भी ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है।

सुझाव

1. **कानूनी प्रावधानों का सख्ती से पालन:** घरेलू हिंसा अधिनियम (2005) का प्रभावी क्रियान्वयन होना चाहिए।
2. **काउंसलिंग और मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ**: पीड़ित महिलाओं और बच्चों के लिए मुफ्त काउंसलिंग की सुविधा उपलब्ध हो।
3. **स्कूलों की भूमिका:** शिक्षकों को प्रशिक्षित करना चाहिए ताकि वे ऐसे बच्चों की पहचान कर सकें और उन्हें विशेष सहयोग दे सकें।
4. **महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता**: महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए रोजगार और शिक्षा की सुविधा बढ़ाई जाए।
5. **जागरूकता अभियान**: समाज में यह संदेश फैलाना कि घरेलू हिंसा अपराध है और बच्चों के जीवन को नष्ट करती है।
6. **परिवार परामर्श केंद्र (Family Counseling Centres)** की स्थापना।
7. **गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) की भागीदारी**: समुदाय स्तर पर हस्तक्षेप और बच्चों के पुनर्वास की योजनाएँ।

8. **स्पॉट इंटरवेंशन और बचाव (Rescue Operations):** जैसे छतरपुर केस में लड़की की तुरंत सहायता।
9. **मनोवैज्ञानिक सहायता:** ट्रॉमा-इनफॉर्म्ड काउंसलिंग बच्चों के पुनर्वास में अहम।
10. **श्रम, निर्भयता और नशे-मुक्त योजनाएं:** बच्चों के भविष्य के विकल्पों को मजबूत बनाएँ।
11. **सक्रिय निगरानी व डेटा संग्रह**: घरेलू हिंसा और उससे बच्चों पर प्रभाव की निगरानी रखना आवश्यक है।

सन्दर्भ सूची

1. National Family Health Survey (NFHS-5), 2019-21.
2. UNICEF Report on Children and Domestic Violence, 2020.
3. WHO, "World Report on Violence and Health," 2019.
4. Government of India, "Protection of Women from Domestic Violence Act, "2005.
5. https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/38665458/
6. https://www.hindustantimes.com/indore/children-who-witness-domestic-violence prone-to-drug-abuse/story-LY7Nz250EliiuDW40kvMeO.html?utm
7. https://timesofindia.indiatimes.com/city/bhopal/woman-daughter-found-burnt-to-death-in-gwalior-village/articleshow/123440194.cms?utm